International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2, February 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gage as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

'युद्ध में शामिल नहीं थीं चिड़िया' में चित्रित यथार्थ

डॉ. संतोष कौल काक*

साहित्य का समाज से वही सम्बन्ध है जो सम्बन्ध आत्मा का शरीर से है . साहित्य में समाज की उपस्थिति उसको जीवंत बनाये रखती है. साहित्य का उद्देश्य मात्र मनोरंजन नहीं , समाज का पथ – प्रदर्शन भी होता है . साहित्य की अनेक विधाओं में एक महत्वपूर्ण विधा है कविता . कविता मात्र कवि की अनुभूति और भावोच्छवास को ही शब्दबद्ध नहीं करती अपितु व्यापक रूप से जीवन और जगत का पुनः सृजन करने हेतु प्रयासरत भी रहती है .

साठोत्तरी हिंदी कविता समकालीन कविता है . उसके स्वरुप का विवेचन करते हुए डॉ. आनंद दीक्षित कहते हैं , " समकालीन मेरे लिए मात्र काल – बोध के लिए प्रयुक्त की जानेवाली एक भाववाचक संज्ञा नहीं है बल्कि सर्जना के धरातल पर मैं उसे जीवन्तता प्रदान करनेवाली एक शक्ति और सर्जन के लिए एक ऐसा उपयोगी तत्व , जो उसकी कृति को नवता प्रदान करके ग्राह्यता को उस कृति के निकट लाने और उससे आत्मीय भाव से जुड़ जाने का संबल प्रदान करता है , मानता हूँ . दिक्काल के परिवृत्त से घिरा हुआ मनुष्य समकालीन को देश और काल की सीमा में घटित वर्तमान के रूप में देखता है . सामान्यतः समकालीन वह है जो उसके अपने समाज और देश के वृत्त , उसके अपने जीवन – काल में घटित हो रहा है . "1.

समकालीन हिंदी कविता का परिदृश्य बहुत व्यापक एवं वैविध्यपूर्ण है . डॉ. करूणाशंकर उपाध्याय के अनुसार , " आज तक हिंदी के काव्य – क्षेत्र में लगभग तीन दृष्टि से समकालीन कविता महत्वपूर्ण है . यहाँ समकालीन कविता से मेरा आशय आपातकाल के बाद की कविता से है और मैंने समकालीन शब्द का प्रयोग कालबोधक प्रत्यय के रूप में किया है . आज की कविता मनुष्य के सुख – दुःख , आशा – आकांक्षा , मूल्य व जीवन की स्थितियों एवं विसंगतियों को अपेक्षाकृत ज्यादा प्रामाणिकता के साथ चित्रित कर रही है . वह सच्चे अर्थों में जीवनधर्मी कविता है . जनता के पक्ष की कविता , पढ़े – लिखे शहरी मध्यवर्ग एवं कुछ हद तक ग्रामीण मध्यवर्ग की कविता बनकर रह गयी है . इस विशाल देश के विराट जन – जीवन का एक बहुत बड़ा भाग इस कविता में अनुपस्थित है . यदि हम राष्ट्रभाषा हिंदी को अखिल भारतीय एवं वैश्विक व्यापकता प्रदान करना चाहते हैं और यह अपेक्षा करते हैं कि जिन प्रदेशों में उसकी उपस्थिति लगभग न के बराबर है , वहाँ भी

* एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष - हिंदी विभाग, बी. एम. रुइया गर्ल्स कॉलेज, मुम्बई।

उसका स्वर – संभार सुनायी पड़े तो यह ज़रूरी है कि हमारे हिंदी साहित्य में राष्ट्र – राज्य के समस्त भाषा – भाषियों , धर्मावलम्बियों , एवं जातीयताओं की जीवनाकांक्षा की रचनात्मक उपलब्धि प्रतिबिम्बित हो , जिससे वे रागात्मक तादात्म्य स्थापित कर सकें . "2. समकालीन हिंदी कविता अनेक धाराओं में प्रवाहित है. विषय – वस्तु , कथन – भंगिमा और शिल्पगत प्रयोगों की दृष्टि से उसमें विषय - वैविध्य दिखाई देता है . इसमें आज के मनुष्य का जीवन विविध तरह से प्रतिबिंबित हुआ है . इस कविता के केंद्र में है मनुष्य का व्यक्तिगत जीवन , सामाजिक परिदृश्य , उसके जीवन पर गहराते सांस्कृतिक , व्यावसायिक और राजनीतिक संकट और इन सभी को बड़ी हीं संजीदगी से समकालीन काव्य में प्रस्तुत किया जा रहा है . आज मनुष्य के जीवन में जो आपा - धापी , है , संघर्ष है , उनके एवं परिस्थितियों के दबाव के कारण जो विसंगतियाँ मानव – जीवन और समाज में उत्पन्न हुई हैं , हो रही हैं उसे सही मायनों में समकालीन कविता प्रकट करती है. इसके विषय में डॉ. वेद प्रकाश अमिताभ का कहना है ," समकालीन कवियों ने जन के बिंब को उभारने के लिए कुछ चरित्रों की सर्जना की है . ये सारे चरित्र वस्तुतः एक चरित्र, अधिसंख्यक जनसमुदाय के चरित्र को सम्पूर्णता में व्यक्त करने के लिए आज के जीवन से उठा लिए गए हैं ." 3.

समकालीन हिंदी कविता में गोपालदास नीरज , केदारनाथ सिंह , कुँवरनारायण , अशोक बाजपेयी , लीलाधर जगूड़ी , चंद्रकांत देवताले , विष्णु खरे , सोम ठाकुर डॉ. सुधाकर मिश्र , नंदलाल पाठक , वेणुगोपाल , आलोक धन्वा , विजय कुमार , अरुण कमल , राजेश जोशी , कात्यायनी , डॉ. सुनीता जैन , विश्वनाथ सचदेव , निलय उपाध्याय आदि महत्वपूर्ण नाम हैं. हृदयेश मयंक समकालीन हिंदी कविता की इसी कड़ी के एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं . एक ऐसे रचनाकार हैं वे , जिनका मन इतने वर्ष मुंबई जैसे महानगर में व्यतीत करने के बाद भी अपनी जड़ों को , अपने गाँव को , वहाँ के लोक जीवन को भूल नहीं पाया है . वे एक ऐसे जनवादी एवं प्रगतिशील कवि हैं , जिनकी रचनाओं में मजदूरों , किसानों , गरीबों , बेबसों का दर्द छलक उठता है . इनके प्रति उपजी करुणा व आत्मीयता उनके लेखन का केंद्र – बिंदु है . उनकी रचनाओं में ग्रामीण एवं नगरीय बोध की अभिव्यक्ति सहजता के साथ उभर आयी है . प्रगतिशील होने के नाते इन्होने धर्मनिरपेक्ष एवं लोकतांत्रिक समाज व्यवस्था पर बल दिया है . वे प्रतिभा संपन्न रचनाकार होने के साथ – साथ मानवीय संवेदनाओं से प्रेरित एक गंभीर विचारक और चिन्तक भी हैं .

मैं शहर और सूरज (1986) , सायरन से सन्नाटे तक (1988) , युद्ध में शामिल नहीं थी चिड़ियाँ (1994) , ठहराव के विरुद्ध (2010) जैसे काव्य – संग्रह , अपने हिस्से की धूप (2001) , दिल से निकली दिल की बात (2006) जैसे ग़ज़ल – संग्रह , एक महक सोंधी माटी की : ग़ज़ल – गीत एवं कविताओं का संग्रह (2009) , और मुंबई का साहित्यिक परिदृश्य : एक पुनरावलोकन (2009) – समीक्षा उनकी प्रकाशित कृतियाँ हैं .

हृदयेश मयंक अपनी रचनाओं में कभी गूँगों की जुबां बनते हैं तो कभी कमजोरों की कमान. ' युद्ध में शामिल नहीं थी चिड़ियाँ ' संग्रह में एक मुसहिन , नौकरी पेशा महिला , हमारे पूर्वज , एक थी चिड़िया सोने की , बाज़ार , सवाल , तितलियाँ , मृत्युबोध , रविवार , बचपन , पिता , उजली धूप , मिट्टी , लडकियाँ , युद्ध में शामिल नहीं थी चिड़ियाँ आदि कविताएँ हैं . इन कविताओं में पिता हैं , बच्चे हैं , नौकरीपेशा स्त्री – पुरुष हैं , उनकी समस्याएँ हैं , भ्रष्टाचार है , बदलते मूल्य हैं और ये सब है सामाजिक - सांस्कृतिक , राजनीतिक परिवेश को पूर्णतः अपने यथार्थ रूप में उभारते हुए .

आज समाज में साम्राज्यवादी शक्तियाँ हावी हैं . उनसे उपजी विषमता के कारण मानव फिर चाहे वह महानगर का हो या गाँव का , आर्थिक विषमताओं से ग्रस्त है . आर्थिक असमानताओं ने संबंधों में कडवाहट पैदा कर दी है और मानव – मानव के बीच दूरियाँ बढ़ा दी हैं . गाँव पिछड़ेपन में डूबे हैं और शहर एक अलग तरह की यंत्रणाओं से भरा हुआ है . इसमें घिर चुका है एक आम आदमी . युवा पढ़ा – लिखा वर्ग बेरोज़गारी की महामारी से त्रस्त है . स्त्री आज भी अपनी आज़ादी के लिए जद्दोजहद कर रही है . वह आज भी उपभोग की वस्तु ही है . उसकी खरीद – फरोख्त आज भी जारी है . औरत की यह मजबूरी कवि को बेचैन करती है जिसे उसने ' बाज़ार ' कविता में अभिव्यक्त किया है -

जिस्मों की होती है खुली नुमाइश
कहीं नेपाली तो कहीं बंगाली
कहीं तिब्बती तो कहीं संथाली
रकम रकम की ज़रूरतों के लिए
बेचा और खरीदा जाता है . 4.

एक बौनापन आज आदमी पर हावी होने की कोशिश में है जो मानवीय अनुभूतियों को जड़ता की स्थिति तक पहुँचा देना चाहता है ताकि आदमी दुःख और असहायता को ही अपनी नियति मान ले . इस सामाजिक यथार्थ को हृदयेश मयंक अपने इस संग्रह में बखूबी उभारते हैं . लेकिन उनकी कविता में आदमी डरकर बैठ नहीं जाता . वह सजग होकर इसके खिलाफ लड़ता है , संगठित होता है . 'अबलापन के खिलाफ कविता में समाज की ऐसी ही एक सजग स्त्री का चित्र दृष्टव्य है –

घरों में , दफ्तरों में
सभी उठल्लुओं निठल्लुओं
और दरिंदों के खिलाफ
अब जागने लगी हैं स्त्रियाँ . 5 .

कवि की यह सजगता आश्वस्त करती है क्योंकि वह यथार्थ की विसंगतियों मात्र को रेखांकित नहीं करते अपितु उसे बदलने की तीव्र इच्छा भी सक्रियता से व्यक्त करते हैं . सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया में साहित्य की यही भूमिका सार्थक है .

हृदयेश मयंक मूल रूप से ग्रामीण चेतना के कवि हैं . उनके भीतर का गाँव अभी भी जाग रहा है . इसके फलस्वरूप गाँव के प्रति ममता व लगाव इनके काव्य में आज भी मूर्तिमान होती है . 'युद्ध में शामिल नहीं थी चिड़िया' संग्रह की कविताओं में ग्रामीण अंचल को रूपायित करती हुई अनेक कवितायें हैं इस देश का किसान , ग्राम्य जीवन जी चुका इंसान अपने गाँव को लेकर जो रागात्मक जुड़ाव महसूस करता है , वह जुड़ाव मयंक जी की कविताओं में साक्षात उपस्थित है . स्वयं लेखक शहरी जीवन जीते हुए भी गाँव को अपने भीतर किस प्रकार महसूस करते हैं , कैसे बार – बार वहाँ की स्मृतियों में खोकर आनंद का अनुभव करते हैं , इसे इस संग्रह की अनेक कविताओं से जाना जा सकता है . 'बचपन' कविता में कवि अपने बचपन को याद करता हुआ कहता है कि किस तरह से फलों की खुशबू और माटी की गंध को छोड़ आया हूँ . तालाब की डुबकियां , टुटही टेबल पर मुंशी जी की छड़ी , स्कूल की खपरैली नल का बलुहा पानी , इकाई दहाई गिनते पहाड़े , पोखरे की लहरी छठ करती स्त्रियाँ और उस गाती बजाती दुनिया को वे छोड़ आये हैं जो उन्हें बहुत याद आती है –

छोड़ आया हूँ कालिख पुती हथेलियों को
इस बेसुरे शहर में आने से पहले
जी हाँ छोड़ आया हूँ गाती बजाती एक दुनिया
जिसे आज भी अक्सर याद करता हूँ . 6.

' पिता ' कविता में भी वे अपने घर को , गाँव को , वहां के नीम के पेड़ , उदास कौवे को , आँगन को , खटोले पर बैठी माँ को याद करते हुए गाँव की पारंपरिक , पारिवारिक संस्कृति को याद करते हुए दिखाई देते हैं . 'किसान के पाँव' कविता में गाँव की बदहाली का यथार्थ चित्र देखिये –

आज गाँव तो हैं पर
नदियाँ जलहीन
खेत तो हैं पर फलों – फूलों से शून्य
खेत तो हैं पर घरों में अन्न नहीं
बच्चे हैं पर आंसूँ बतलाते हैं बदहाली की दास्तान
रौशनी है , पर आबो हवा में घुल गया है ज़हर
शहर तय करने लगे हैं गाँव की तकदीर . 7.

इनकी कवितायें सांस्कृतिक चेतना से ओतप्रोत हैं . उत्तर प्रदेश , विशेषकर पूर्वांचल की लोक – संस्कृति उनकी कविताओं में रूपायित हुई है . महके हुए फागुन , बहकी धूप, कोयलिया की कूक , मदमाता हुआ महुआ , विरहिन का गीत , पनघट की पनिहारिन , धरती माता , मिट्टी की सौंधी गंध के साथ - साथ माता – पिता , ग्रामीण जीवन और संस्कार भी उनकी रचनाओं में मुखर होकर उभरा है .

समकालीन कवियों ने महानगरीय जीवन को , ख़ास तौर पर ग्रामीण अंचल से आये हुए व्यक्तियों के बदलते परिवेश को अपनी काव्य रचनाओं में प्रमुखता से दर्शाया . कवि मयंक भी ग्रामीण परिवेश से महानगरों में आकर बस गए लोगों में से हैं . अतः गाँव और शहर के वातावरण व वहाँ की संस्कृति , सभ्यता आदि में भिन्नता को देखकर उन्होंने अपनी कविताओं में महानगरीय जीवन की जीवन - शैली को अपनी रचना के माध्यम से लोगों के सामने बड़ी सहजता से प्रस्तुत किया . मयंक जी महानगरों में हो रहे आज के नए परिवर्तन व आधुनिकता का वर्णन करते हुए यह भी बताते हैं कि महानगरीय जीवन में गाँव से आये हुए व्यक्ति को किस तरह स्वयं को नए परिवेश में ढलने के लिए बहुत कुछ नया जानना , सीखना और समझना भी पड़ता है . कवि स्वयं भी रोज़ी रोटी की तलाश में गाँव से शहर आये थे . इसलिए ऐसे मनुष्य की पीड़ा और बैचेनी को वे बखूबी समझते हैं . महानगर का वातावरण उन्हें बेचैन करता है . महानगरीय जीवन में पल – पल कुटिलता , चतुराई , लूट – खसोट , धोखाधड़ी का सामना करना पड़ता है , मानवीय संवेदना गायब हो रही है , व्यक्ति इतनी भीड़ में भी अकेला निरुपाय , असहाय है , इसका वर्णन उन्होंने किया है –

सड़क पर सोया हुआ आदमी
सपनों के लिए
रिश्तों के लिए
लड़ते हुए सबका था
पर आज फुटपाथ की
इस ज़मीन के सिवाय
पास कोई नहीं था . 8.

हृदयेश मयंक जी की कविताएँ एक जनवादी और प्रतिबद्ध कवि की कवितायें हैं जिसकी साम्यवाद में गहरी आस्था है . इनकी अनेक कविताएँ भारतीय राजनीति में आई गिरावट, और मूल्यहीनता को अभिव्यक्त करते हुए राजनेताओं के भ्रष्ट चरित्रों का नकाब उतार फेंकती हैं . भारत में सत्ता पर चाहे कोई भी दल बैठा हो , सभी ने अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए लगभग एक – सी शैली अपनाई . सरहद पर आक्रमण का हौवा बनाए रखना, साम्प्रदायिक - धार्मिक उन्माद फैलाना , घोर आर्थिक संकटों में जनता को धकेलना सभी राजनीतिक दलों का काम रहा . भारत जो कभी सोने की चिड़िया कहलाता था , आज ऐसे ही स्वार्थी , भ्रष्टाचारी लोगों के कारण दुर्दशा ग्रस्त है इसे कवि ' सोने की चिड़िया ' कविता में व्यंग्य द्वारा उभारता है , किन्तु यहाँ भी कवि की दृष्टि सकारात्मक ही है -

जो बिखरे हैं एक बनेंगे
बिगड़ा सब बन जाएगा
चिड़िया को तो उड़ना ही है
देखें कौन प्राण फूंकता

देखें कौन पंख जमाता . 9.

मानव प्रकृति और प्रवृत्ति के साथ – साथ आदिम युग से कवियों को प्रकृति का अनंत सौन्दर्य रिझाता रहा है . अतः प्रकृति – चित्रण कवियों के काव्य संसार का मुख्य एवं प्रिय विषय रहा है . अनत सौन्दर्य – राशि से भरपूर , किसी समय हरी - भरी प्रकृति आज संकटग्रस्त है . उसके अस्तित्व के साथ – साथ मानव का अस्तित्व भी संकट से ग्रस्त है . आज प्रकृति और पर्यावरण में अनवरत असंतुलन बढ़ रहा है . इसका कारण है उन्नति और विकास के नाम पर मनुष्य द्वारा प्रकृति का अनियंत्रित उपभोग और दुरूपयोग . यूँ प्रकृति में शांति का अलौकिक साम्राज्य है जिससे ह्रदय का अनंत विकास होता है . सच्चा प्रकृति – प्रेम मनुष्य को असीम उल्लास और गहन शांति देगा इसलिए प्रकृति के अंधाधुंध दोहन से हमें बचना चाहिए इस बात को कवि अपनी कविता में समझाता है –

अभी अभी तो ढँका है
सर का खुला आकाश
बच्चे न जानें कितनी रातें
तारे गिनते पूछते रहे थे कि
कौन हैं ये लोग जो उजाड़ते हैं घर . 10.

उजली धूप , मिट्टी , गर्मी में रात गर्मी में दिन , ओ बादल आदि कविताएँ भी ह्रदयेश मयंक जी के प्रकृति – प्रेम को दर्शाती हैं . कवि बादलों से आने की गुहार करते हैं ताकि धरती शीतल हो जाय , समुद्र भर जाएँ , शीतल बयार बहे और सूखी धरती पर हरे हरे अंकुर उग आएँ –

सूखी धरती की छाती में
उग आयें हरे हरे अंकुर
चमक उठे सारा दिगंत
भर आये सारे जन – जन का मन . 11 .

यहाँ यह भी लक्षित होता है कि प्रकृति के आकर्षण में बंधकर भी कवि अपनी जनवादी दृष्टि नहीं छोड़ पाता . कवि की संवेदना प्रकृति के प्रेम से परिपूरित तो है ही , उसके साथ- साथ वह जन जीवन के सुख – दुखों के प्रति भी संवेदनशील है .

मयंक जी आम आदमी के कवि हैं. उनकी कविता मनुष्य के आर्थिक संघर्ष को , भुखमरी तथा गरीबी को बड़ी संजीदगी से पेश करती है . वे आर्थिक धरातल पर साम्यवाद के हिमायती हैं . उनकी कविताओं में इस देश का गरीब – मजदूर , किसान और पीड़ित व्यक्ति अभिव्यक्ति पाता है . मनुष्य की रोज़ी – रोटी से जुड़े प्रश्नों , समस्याओं को इनकी कविता शब्दबद्ध करती है . बाज़ार, सवाल , कठिन दिनों , लो गुज़र गया एक और वर्ष , लडकियाँ आदि कवितायें इसी भाव को अभिव्यक्त करती हैं . एक तरफ अमीर , सुविधासंपन्न लोग हैं , जिनके पास जीवन के सभी साधन हैं . जिन्हें नाम , यश रूपये पैसे की कोई कमी नहीं है . वे जो चाहे वो खरीद सकते हैं , पा सकते हैं . ये हमारे बीच

में नेता की , अफसरों की , उद्योगपतियों की शक्ल में हैं . आज सब ओर ऐसे लोगों की तूती बोलती है . पर इन जैसे सफेदपोश लोग ही सामान्य जनता की उम्मीदों को दफ़न करने का काम बखूबी करते हैं . इनकी उन्नति और प्रगति तो दिन दूनी और रात चौगुनी हो रही है , किन्तु आम मेहनतकश इंसान और उसका परिवार तो जहाँ था , जैसा था आज भी वैसा ही है . विकास और उन्नति तो उसे छू भी नहीं पाये हैं -

पहिन कर , परदेश से मजूरी कर
लौटे पी को रिझाती है चमारिन
इक्कीसवीं सदी में रहते हुए भी
अट्ठारवीं सदी में जीती है चमारिन . 12

डॉ. शिवकुमार मिश्र ने उनके विषय में कहा है , " हृदयेश मयंक जनधर्मी प्रतिबद्धता के और अनादृत – अबाधित उस गहरे जीवन राग के कवि हैं , समय की मौजूदा विभीषिकाएं भी जिसे मंद नहीं कर पायी हैं . "13.

इस तरह वर्तमान समाज का सम्पूर्ण परिवेश इस संग्रह की कविताओं में परिलक्षित होता है . सामाजिक समस्याओं के प्रति सहानुभूति जताकर वे रुक नहीं जाते अपितु या तो वे अपने स्तर पर उन समस्याओं का समाधान ढूँढने की कोशिश करते हुए दिखाई देते हैं , या फिर समाधान ढूँढने के लिए प्रेरित करते हुए दीखते हैं . इस कोशिश में उन्होंने जीवन की सुन्दरता – कुरूपता को , मानवीय संबंधों की जटिलता – मधुरता को , लघुता को – गरिमा को , स्वार्थ की लघुता को – प्रेम की उदात्तता को समझने और प्रस्तुत करने का निष्ठापूर्ण प्रयास किया है .

सन्दर्भ सूची

1. समकालीन कविता और सौन्दर्यबोध ., डॉ. रोहिताश्व , पृष्ठ सं.24-25
2. आधुनिक हिंदी कविता में काव्य – चिंतन , डॉ. करुणाशंकर उपद्याय , पृष्ठ सं.78
3. समकालीन कविता का परिदृश्य , डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ , पृष्ठ सं.52 .
4. युद्ध में शामिल नहीं थी चिड़िया, हृदयेश मयंक , पृष्ठ सं.23 .
5. युद्ध में शामिल नहीं थीं चिड़ियाँ , हृदयेश मयंक , पृष्ठ सं.90 .
6. युद्ध में शामिल नहीं थीं चिड़ियाँ , हृदयेश मयंक , पृष्ठ सं.56 .
7. युद्ध में शामिल नहीं थीं चिड़ियाँ , हृदयेश मयंक , पृष्ठ सं.44 .
8. युद्ध में शामिल नहीं थीं चिड़ियाँ , हृदयेश मयंक , पृष्ठ सं.95 .
9. युद्ध में शामिल नहीं थीं चिड़ियाँ , हृदयेश मयंक , पृष्ठ सं.21 .
10. युद्ध में शामिल नहीं थीं चिड़ियाँ , हृदयेश मयंक , पृष्ठ सं.62 .
11. युद्ध में शामिल नहीं थीं चिड़ियाँ , हृदयेश मयंक , पृष्ठ सं.96
12. युद्ध में शामिल नहीं थीं चिड़ियाँ , हृदयेश मयंक , पृष्ठ सं. 14.
13. मुंबई का साहित्यिक परिदृश्य : एक पुनरावलोकन , हृदयेश मयंक , पृष्ठ सं 27 .